

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে অষ্টমং দশকম্ ॥

প্রলযর্র্ণনং, জগৎসৃষ্টিপ্রকারর্র্ণনং চ

এরং তারং প্রাকৃতপ্রক্ষযান্তে

ব্রাহ্মে কল্পে হ্যাদিমে লঙ্কজন্মা।

ব্রহ্মা ভূযস্ত্ত এরাপ্য রেদান্

সৃষ্টিং চক্রে পূর্কল্পোপমানাম্ ॥ 8.1 ॥

সোহযং চতুর্য়ুগসহস্রমিতান্যহানি

তারন্মিতাশ্চ রজনীর্বহশো নিনায।

নিদ্রাত্যসৌ ংরযি নিলীয সমং স্বসৃষ্টে -

নৈমিত্তিকপ্রলযমাহরতোহস্য রাত্রিম্ ॥ 8.2 ॥

অস্মাদৃশাং পুনরহর্মুখকৃত্যতুল্যাং

সৃষ্টিং করোত্যনুদিনং স ভরংপ্রসাদাৎ।

প্রাপ্ত্বান্নকল্পজনাযাং চ পরাযুযাং তু

সুপ্তপ্রবোধনসমাস্তি তদাহপি সৃষ্টিঃ ॥ 8.3 ॥

পঞ্চাশদব্দমধুনা স্বরযোর্ধরূপ -

মেকং পরাধর্মতিরূত্য হি রর্ততেহসৌ।

তত্রান্ত্যরাত্রিজনিতান্ কথযামি ভূমন্

পশ্চাদ্দিনারতরণে চ ভরদ্বিলাসান্ ॥ 8.4 ॥

দিনারসানেহথ সরোজযোনিঃ

সুষুপ্তিকামস্ত্বযি সন্মিলিল্যে।

जगन्ति च ऋज्जठरं समीयु -
सुदेदमेकार्णरमास रिश्रम् ॥ 8.5 ॥

তরৈর রেখে ফণিরাজি শেষে
জলৈকশেষে ভুরনে স্ম শেষে।
আনন্দসান্দ্রানুভবস্বরূপঃ
স্বযোগনিদ্রাপরিমুদ্রিতাত্মা ॥ 8.6 ॥

कालाख्यशक्तिं प्रलयारसाने
प्रबोधयेत्यादिशता किलादौ।
ऋया प्रसुप्तं परिसुप्तशक्ति -
ब्रजेन तत्राखिलजीरधाम्ना ॥ 8.7 ॥

चतुर्गुणाणां च सहस्रमेरं
ऋयि प्रसुप्ते पुनरद्वितीये।
कालाख्यशक्तिः प्रथमप्रबुद्धा
प्रबोधयत्नां किल रिश्रनाथ ॥ 8.8 ॥

रिवुध्य च ऋं जलगर्भशायिन्
रिलोक्य लोकानखिलान् प्रलीनान्।
तेष्वेर सुम्भ्यात्प्रतया निजास्तः -
स्थितेषु रिश्रेषु ददाथ दृष्टिम् ॥ 8.9 ॥

ततस्त्रदीयादयि नाभिरक्त्रा -
दुदक्षितं किष्णं दिर्यपद्मम्।
निलीननिश्चेषपदार्थमाला -
सङ्केतपरूपं मुकुलायमानम् ॥ 8.10 ॥

তদেতদন্তোরহকুড্মলং তে
কলেবরাং তোযপথে প্ররুচম্।

बहिर्निरितं परितः स्फुरन्तिः
स्वधामभिर्भ्रान्तमलं न्यकुन्तं ॥ 8.11 ॥

सम्फुल्लपत्रे नितरां रिचित्रे
तस्मिन् भरद्वायधृते सरोजे ।
स पद्मजन्मा रिधिरारिरासीं
स्वयम्प्रबुद्धाखिलरेदराशिः ॥ 8.12 ॥

अस्मिन् परास्मिन् ननु पादमकल्ले
रमिथमुखापितपद्मयोनिः ।
अनन्तभुमा मम रोगराशिं
निरुक्तिं रातालयरस रिषेण ॥ 8.13 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टमं दशकं समाप्तम् ॥